21 नवम्बर, 2017 को नई दिल्ली में दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी की स्मृति व्याख्यान माला में मुख्य अतिथि के रूप में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण ।

1. श्री दत्तोपन्त जी का जीवन प्रेरणादायक, उनकी राष्ट्रीय समझ व समर्पण, उनका सादगीपूर्ण जीवन, उनकी दूरदृष्टि, राष्ट्र–निर्माण की शक्ति, कृषक समुदाय एवं श्रमिक वर्ग के लिए किए गए उनके सभी प्रयास एवं अनगिनत ऐसे तथ्य हैं जो ठेंगड़ी जी को पूज्य लोगों की श्रेणी में ला देते हैं। तभी तो उन्हें राष्ट्र ऋषि के रूप में संबोधित किया गया है।

2. **श्री दत्तोपंत बापूराव ठेंगड़ी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वह एक योग्य सांसद, मजदूर नेता, कुशल संगठक और एक महान देशभक्त थे जो स्वदेशी विचारधारा से जुड़े रहे। जैसा कि हम सब जानते हैं, उन्होंने श्रमिक वर्ग के हितों का समर्थन किया तथा अन्य संस्थाओं के साथ–साथ 1955 में भारतीय मजदूर संघ, 1979 में भारतीय किसान संघ तथा 1991 में स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना की।**

3. **सांसद के रूप में वह लगातार दो बार राज्य सभा के सदस्य रहे। वह जमीन से जुड़े व्यक्ति थे जिन्होंने श्रमिकों के हितों और उनके उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उन्होंने लगभग 50 वर्षों तक सामाजिक व राष्ट्रीय उत्थान का काम किया। उनके विचार और दृष्टिकोण आज भी प्रासंगिक हैं।**

4. उनके जीवन दर्शन व क्रियाकलापों में कालिदास जी के इस श्लोक की झलक मिलती है–

''पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः?'' (कालिदास)

(अर्थात पुरानी होने से ही न तो सभी वस्तुएँ अच्छी होती हैं और न नयी होने से बुरी तथा हेय। विवेकशील व्यक्ति अपनी बुद्धि से परीक्षा करके श्रेष्ठकर वस्तु को

अंगीकार कर लेते हैं और मूर्ख लोग दूसरों द्वारा बताने पर ग्राह्य अथवा अग्राह्य का निर्णय करते है।)

5. आज जब विश्व ग्लोबलाइजेशन की ओर अग्रसर है। मुझे उनके ये विचार कि भारत स्वाभाविक रूप से अंतर्राष्ट्रीयवादी हैं, का स्मरण होता है।

6. दत्तोपन्त जी का यह विश्वास/कथन की समूचा ज्ञान सार्वभौम है, यह न पाश्चात्य है न पौर्वात्य। उनके व्यापक दृष्टिकोण पर चिन्तन करें, तो इसकी गहराई समझ आती है। दत्तोपन्त जी हमेशा सार्वभौम नियमों की बात करते थे। इसके तहत समय–समय पर समाज के ऊपरी ढांचे के पुनर्निर्माण की बात करते थे।

7. हमारा राष्ट्र एक अद्भुत, प्राचीन एवं विशिष्ट राष्ट्र है और वह न केवल राष्ट्र बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी है। उनका मानना था कि हम अपने अतीत की अवहेलना नहीं कर सके हैं पर सदियों के गतिरोधकाल में जो भूल–चूक हुई है, उसे सुधारे, उसे आगे ढोते ना रहे। ऐसा विवेक राष्ट्रीय चिन्तन के लिए आवश्यक है।

8. उनके विचार में मानव चेतना की प्रगति के मार्ग में राष्ट्रवाद, आदिम जातिवाद और मानववाद के बीच का सेतु हैं और स्वयं मानववाद ही Universalisation की दिशा में एक बड़ा कदम है।

9. दत्तोपन्त जी एक कुशल संगठनकर्ता थे। उनका मानना था कि कोई भी विचार अगर वास्तव में स्थापित करना है तो उसका व्यावहारिक आचरण करके दिखाना चाहिए। महात्मा गांधी जी की भी अंतरदृष्टि कुछ ऐसी ही थी। हमारे वैदिक दर्शन के अनुसार सम्पूर्ण अस्तित्व ही परमात्म चैतन्य का आविष्कार हैः–''सर्वं खल्विदं ब्रहम् ईशवास्यमिदं सर्वम्'' अथवा ''वासुदेवः सर्वम!'' इन वेद एवं गीता वाक्यों का यही भाव है।

10. दत्तोपन्त जी का अर्थ विचार बहुत गहरा एवं सर्वग्राही था। वे ऐसा चाहते थे कि भारतीय चिन्तन के अनुरूप ही अर्थव्यवस्था का निर्धारण हो। वह यह अच्छी तरह जानते थे कि पश्चिमी जगत असीम उपभोगवाद पर चलता है और भारत संयमित उपभोग पर। प्रत्येक भारतीय मन में अन्त्योदय का विचार आता है। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए कि

हमारी सभ्यता, संस्कृति, परम्परा एवं आचरण सभी उसी रंग में रंगे हैं–"Unto to Last", यहां प्राणी तथा वनस्पति तक का भी ख्याल आत्मीयता के साथ रखा जाता है।

11. मजदूरों और किसानों का कल्याण उनकी प्राथमिकता की सूची में था। वे देश के बहुत बड़े, शोषित–पीड़ित एवं असंगठित जन समुदाय में हमेशा आत्मविश्वास जागृत करने का कार्य करते थे। उन्होंने यह आह्वान किया था कि **''हर किसान हमारा नेता है। '' उन्होंने यह नारा दिया था कि ''देश के हम भंडार भरेंगे, लेकिन कीमत पूरी लेंगे।''**

12. किसानों के व्यापक हित को ध्यान में रखते हुए उन्होंने भारतीय किसान संघ की नींव भी रखी जिनमें किसानों के हितों पर सामूहिक चर्चा करते हुए समुचित निर्णय लेकर उन्हें नेतृत्व प्रदान किया जा सके। **वास्तव में मजदूर और किसान ही तो हमारे समाज की रीढ़ हैं।**

13. स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना करके उन्होंने देशवासियों को अपने मूलभूत हितों की रक्षा के लिए खड़ा होने के लिए प्रेरित किया। लोकतंत्र में नागरिकों को प्रदत्त विचारों की अभिव्यक्ति के अधिकार को उन्होंने सर्वोच्च स्थान दिया। स्वदेशी को मजबूत कर भारतीय अर्थव्यवस्था को ऊंचा उठाने, यहां की कला–संस्कृति को संजोकर रखने के लिए उनका आह्वान किया कि स्वदेशी जागरण के अभियान में सहभागी होना, सभी देशभक्तों का अधिकार एवं कर्त्तव्य है। कोई भी आन्दोलन यदि यशस्वी होता है तो विचारों के आधार पर होता है। स्वदेशी वैचारिक आन्दोलन है और इसकी व्यापकता देश को मजबूत करती है।

14. आर्थिक साम्राज्यवाद के विरुद्ध उन्होंने मुखर रूप से संघर्ष किया एवं सरकार को अपनी जनता के हित सुरक्षित करने की दिशा में काम करने की पैरवी की। स्वदेशी जागरण मंच एवं अन्य कई देशभक्तिपूर्ण संगठनों द्वारा देश भर में किए गए सभा, संगोष्ठी एवं प्रदर्शनों के माध्यम से उन्होंने आम जनमानस में उन विदेशी शक्तियों के विरुद्ध संघर्ष किया एवं विश्व व्यापार संगठन को ऐसे फैसले लेने पर मजबूर किया जो

हमारी जनता के हित में थे। विदेशों में सिद्धान्त है अधिकतम उत्पादन–अधिकतम उपयोग, जबकि प्राचीन काल से ही हमारा सिद्धान्त रहा है अधिकतम उत्पादन–न्यूनतम उपयोग–नियंत्रित उपभोग–संयमित उपभोग। जब संयमित उपभोग होता है तो बचत बढ़ती है। बचत बढ़ती है तो अर्थव्यवस्था विकसित होती है। ठेंगड़ी जी का यह पूर्ण विश्वास था और वे समय–समय पर यह बात कहते थे कि अगर न्यूनतम उपभोग को स्वीकार करेंगे तो हमारे समाज ज्यादा समतामूलक बनेगा। गांधी जी के बहुचर्चित वाक्य–There is enough on earth for everybody's need, but not enough for everybody's greed." में भी यही भावना छिपी है।

15. **ठेंगड़ी जी का दृढ़ विश्वास था कि बिना सोचे–विचारे पश्चिमी देशों की नकल करने की बजाए भारत की अपनी मूल्य प्रणाली और सांस्कृतिक लोकाचार का अनुसरण करने से ही राष्ट्रीय पुनर्जागरण और विकास हो सकता है।** स्वदेशी के अनेक प्रकरण आज भी हमें सोचने को प्रेरित करते हैं। वियतनाम के प्रेसिडेंट हो ची मिन्ह भारत आए थे। जैसे ही वे यहां पहुंचे, कुछ पत्रकार हवाई जहाज तक गए थे। उन्होंने देखा कि उनकी पैन्ट की सिलाई कहीं–कहीं दुबारा सिली हुई है। लोगों ने पूछा, आप तो राष्ट्रपति हैं फिर आपकी पैन्ट ऐसी क्यों– उन्होंने जवाब दिया। "My country can only afford this." यह स्वदेशी है। ऐसा ही एक प्रकरण गांधी जी से संबंधित है। गांधी–इर्विन पैक्ट पर चर्चा चल रही थी। दोपहर के बाद चाय का समय आया। लार्ड इर्विन के लिए चाय आई। गांधी जी के लिए निम्बू–पानी। गांधी जी ने जेब से पुड़िया निकाली और पानी डाला। वायसराय ने पूछा कि क्या है यह। गांधी जी ने कहा– आपके नमक कानून का उल्लंघन करते हुए मैंने जो नमक बनाया है, यह नमक की पुड़िया से नमक डाल रहा हूं, यह स्वदेशी है।

16. हिन्दी, मराठी और अंग्रेजी भाषाओं में माहिर लेखक दत्तोपंत जी ने अनेक पुस्तक और पुस्तिकाएं लिखीं जिनमें से अधिकांश कामगारों और दलितों के समक्ष पेश आने वाली कठिनाइयों के बारे में थी। ''तीसरा विकल्प'' उनकी अंतिम पुस्तक थी जिसका

हिन्दी अनुवाद नागपुर की डॉ. लीना रस्तोगी ने किया है। Globalisation के इस दौर में यह पुस्तक बहुत सामयिक एवं प्रासंगिक है।

17. श्रद्धेय दत्तोपंत जी ने यह स्पष्ट मार्गदर्शन दिया था कि "World Trade Organization is a misnomer, it is a Western World Trade Organisation". यह उनके नेतृत्व का ही परिणाम था कि विश्व व्यापार संगठन ने विकासशील देशों के मुताबिक अपने नियमों को कुछ modify किया है।

18. वे मानते थे कि भारतीय जीवन एवं दर्शन पद्धति वास्तव में बहुत unique है एवं जब देशभक्ति से प्रेरित, स्वायत्त और स्वयंशासी जन संगठन राज सत्ता पर, धर्मदंड की भूमिका सफलतापूर्वक निभाएंगे, तभी राजसत्ता राजधर्म का पालन करेगी।

19. समाज के विषय में, अर्थ के विषय में उनकी परिकल्पना इस श्लोक के माध्यम से स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है–

''अभावो वा प्रभावो वा यत्र नास्त्यर्थकामयोः

समाजेष्वात्मरूपत्वं धर्मचक्र प्रवर्त्तनम्।।''

(इसका अभिप्राय यह है कि जहां समाज में अर्थ का और कर्म का अभाव भी नहीं रहता और प्रभाव भी नहीं रहता तथा समाज में ही व्यक्ति का आत्मभाव रहता है, वहीं धर्मचक्र का प्रवर्तन होता है।)

20. दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी सदैव यह कहते थे कि ''**सामाजिक समरसता के बिना सामाजिक समता असम्भव है।**'' वे मानते थे कि सर्वसमावेशी सनातन हिन्दू धर्म के अधिष्ठान पर, हिन्दू समाज की एकात्मता के महान कार्य को सम्पादित करना आवश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर उन्होंने वर्ष 1991 में सर्वपंथ समादर मंच की स्थापना की थी। उनका मानना था कि बढोत्तरी पेड़ के समान हो, पेड़ पनपता है, बढ़ता है, समय

आने पर कुछ पत्तियां झड़ जाती हैं, गिर जाती हैं या हम काट देते हैं। हमारा यह प्रयास रहता है कि जीवन धारा बनी रहे, उसका क्रम न टूटे।

21. श्रद्धेय ठेंगड़ी जी ने, भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ तथा स्वदेशी जागरण मंच जैसे राष्ट्रवादी संगठनों का निर्माण केवल परिवर्तन के वाहक के रूप में ही नहीं, तो राष्ट्र के समक्ष और समर्थ प्रहरी संगठनों के रूप में किया।

22. वह भारतीय अर्थव्यवस्था को कुछ ऐसी दिशा देने के लिए प्रयत्नशील रहे जहां ''शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर **(सौ हाथों से संग्रह करके हजार हाथ में बांट दो)**'' की परिकल्पना साकार होती है। अधिकतम उत्पादन व समतायुक्त वितरण हो, ऐसा प्रयास उन्होंने किया।

23. श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी हिन्दू विचार दर्शन से बहुत प्रभावित थे एवं उन्होंने साम्यवाद और पूंजीवाद की दोनों विचारधाराओं को भौतिकवादी विचार दर्शन कह कर अस्वीकार कर दिया था। उनका ''थर्ड वे ऑफ थिंकिंग'' वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बहुत सामयिक एवं प्रासंगिक सिद्ध हो रहा है। यह भारतीय सोच ही है जिसने आज मेक इन इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया एवं ऐसे ही अन्य रचनात्मक कार्यों को एक गति दी है एवं जो वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन ला रहे हैं।

24. शास्त्रों में गुरू की महत्ता बताते हुए लिखा गया है किः–

''दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकासभाञ्जि।''

(अर्थात् तेजोनिधि सूरज तो अत्यधिक दूरी पर है फिर भी उसकी प्रभा (किरणें) पाकर कमल खिल उठते हैं। उसी प्रकार सुदूर स्थित गुरू के कृपाकटाक्ष से ही सारे काम बन जाते हैं।)

25. ऐसे ही गुरू थे राष्ट्र ऋषि दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी जिन्होंने हमें भारतीय प्रतिष्ठा की पताका को हमेशा उंचा रखने की राह दिखायी। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व में गौतम बुद्ध की दार्शनिकता, महात्मा गांधी की प्रायोगिकता और स्वामी विवेकानन्द के

प्रखर राष्ट्रवाद का अद्भुत संयोग था। उनके द्वारा दिखाए गए सन्मार्ग पर यदि राष्ट्र चले तो वह दिन दूर नहीं, जब भारत विश्व गुरू होगा।

———